सदाशिव ब्रह्मेन्द्र कीर्तनानि

Compiled and typeset
(using LaTeX 2ε , pdfLaTeX) by

P. P. NARAYANASWAMI

©July 2002

1 pibare rAma rasam

१. पिबरे राम रसम्

रागम्ः यमुनाकल्याणि   ताळम्ः आदि

पल्लवि

पिबरे रामरसं रसने
पिबरे राम रसम्

चरणम्

दूरीकृत पातक संसर्गं
पूरित नानाविध फल वर्गम् ॥ १ ॥

जनन मरण भय शोक विदूरं
सकल शास्त्र निगमागम सारम् ॥ २ ॥

परिपालित सरसिज गर्भाण्डं
परम पवित्री कृत पाषाण्डम् ॥ ३ ॥

शुद्ध परमहंसाश्रित गीतं
शुक शौनक कौशिक मुख पीतम् ॥ ४ ॥

2 khelati mama h.rdaye

२. खेलति मम हृदये

रागम्: अठाणा   ताळम्: आदि

पल्लवि

खेलति मम हृदये रामः
खेलति मम हृदये

अनुपल्लवि

मोह महार्णव तारक कारी
रागद्वेष मुखासुर मारी

चरणम्

शान्ति विदेहसुता सहचारी

दहरायोध्या नगर विहारी

परमहंस साम्राज्योद्धारी
सत्य ज्ञानानन्द शरीरी

⋄ ⋄ ⋄ ⋄ ⋄ ⋄ ⋄ ⋄ ⋄ ⋄

3 cetaH shrI rAmam

३. चेतः श्री रामम्

रागम्: सुरटि ताळम्: आदि

पल्लवि

चेतः श्री रामं चिन्तय
जीमूत श्यामम्

चरणम्

अङ्गीकृत तुम्बुरु सङ्गीतं
हनुमद् गवय गवाक्ष समेतम् ॥१ ॥

नवरत्न स्थपित कोटीरं
नव तुलसीदळ कल्पित हारम् ॥२॥

परमहंस हृद् गोपुर दीपं
चरण दलित मुनि तरुणी शापम् ॥३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

4 bhaja re raghuvIram

४. भज रे रघुवीरम्

रागम्: कल्याणि ताळम्: मिश्र चापु

पल्लवि

भज रे रघुवीरं मानस
भज रे बहु धीरम्

अनुपल्लवि

अम्बुद डिंभ विडम्बन गात्रं
अम्बुद वाहन नन्दन दात्रम्

चरणम्

कुशिक सुतार्पित कार्मुक वेदं

वशि हृदयाम्बुज भास्कर पादम्

कुण्डल मण्डन मण्डित कर्णं
कुण्डलि मञ्जकमद्भुत वर्णम् ॥ १ ॥

दण्डित सुन्दसुतादिक वीरं

मण्डित मनुकुलमाश्रय शौरिम्

परम वेदमकुटीप्रतिपाद्यम् ॥ २ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

5 bhaja re gopAlam

५. भज रे गोपालम्

रागम्: हिन्दोळम्   ताळम्: आदि

पल्लवि

भज रे गोपालं मानस
भज रे गोपालम्

चरणम्

भज गोपालं भजित कुचेलं
त्रिजगन्मूलं दितिसुतकालम् ॥१ ॥

आगमसारं योगविचारं
भोगशरीरं भुवनाधारम् ॥२ ॥

कदनकठोरं कलुष्विदूरं
मदनकुमारं मधुसंहारम् ॥३ ॥

नतमन्दारं नन्दकिशोरं
हतचाणूरं हंसविहारम् ॥४ ॥

6 smara vAraM vAram

६. स्मर वारं वारम्

रागम्: कापि   ताळम्: आदि

पल्लवि

स्मर वारं वारम् चेतः
स्मर नन्दकुमारम्

चरणम्

घोषकुटीरपयोघृतचोरं
गोकुलबृन्दावनसञ्चारम् ॥ १ ॥

वेणुरवामृतपानकठोरं
विश्वस्थितिलयहेतुविहारम् ॥ २ ॥

परमहंसहृत्पञ्जरकीरं
पटुतरधेनुकबकसंहारम् ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

7 brUhi mukundeti

७. ब्रूहि मुकुन्देति

रागम्: कुरञ्चि ताळम्: आदि

पल्लवि

ब्रूहि मुकुन्देति रसने
ब्रूहि मुकुन्देति

चरणम्

केशव माधव गोविन्देति
कृष्णानन्द सदानन्देति ॥ १ ॥

राधारमण हरे रामेति
राजीवाक्ष घनश्यामेति ॥ २ ॥

गरुडगमन नन्दक हस्तेति
खण्डित दशकन्धरमस्तेति ॥ ३ ॥

अक्रूरप्रिय चक्रधरेति
हंसनिरञ्जन कंसहरेति ॥ ४ ॥

8 mAnasa sañcara re

८. मानस संचर रे

रागम्: साम   ताळम्: आदि

पल्लवि

मानस सञ्चर रे ब्रह्मणि
मानस सञ्चर रे

अनुपल्लवि

मदशिखिपिञ्छालंकृतचिकुरे
महनीय कपोलविजितमुकुरे

चरणम्

श्रीरमणीकुचदुर्गविहारे
सेवकजनमन्दिरमन्दारे ॥ १ ॥

परमहंसमुखचन्द्रचकोरे
परिपूरितमुरळीरवधारे ॥ २ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

9 gAyati vanamAlI

९. गायति वनमाली

रागम्: मिश्र कापि ताळम्: आदि

पल्लवि

गायति वनमाली मधुरं
गायति वनमाली

चरणम्

पुष्पसुगन्धिसुमलयसमीरे
मुनिजनसेवितयमुनातीरे ॥ १ ॥

कूजितशुकपिकमुख खग कुञ्जे
कुटिलालकबहुनीरदपुञ्जे ॥ २ ॥

तुलसीदामविभूषणहारी
जलजभवस्तुतसद्गुणशौरी ॥ ३ ॥

परमहंसहृदयोत्सवकारी
परिपूरितमुरळीरवधारी ॥ ४ ॥

10 krIDati vanamAlI

१०. क्रीडति वनमाली

रागम्: सिन्दुभैरवि ताळम्: आदि

पल्लवि

क्रीडति वनमाली गोष्ठे
क्रीडति वनमाली

चरणम्

प्रह्ळादपराशरपरिपाली
पवनात्मज जांबवदनुकूली ॥ १ ॥

पद्माकुचपरिरम्भणशाली
पटुशरशासितमालिसुमाली ॥ २ ॥

परमहंसवरकुसुमसुमाली
प्रणवपयोरुहगर्भकपाली ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

11 bhaja rE yadunATham

११. भज रे यदुनाथम्

रागम्: पीलू ताळम्: आदि

पल्लवि

भज रे यदुनाथं मानस
भज रे यदुनाथम्

चरणम्

गोपवधूपरिरंभणलोलं
गोपकिशोरकमद्भुतलीलम् ॥ १ ॥

कपटाङ्गीकृतमानुषवेषं
कपटनाट्यकृतकृत्स्नसुवेषम् ॥ २ ॥

परमहंसहृत्तत्वस्वरूपं
प्रणवपयोधरप्रणवस्वरूपम् ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

12 prativAraM vAram

१२. प्रतिवारं वारम्

रागम्: काम्भोजि ताळम्: मिश्रचापु

पल्लवि

प्रतिवारं वारं
मानस भज रे रघुवीरम्

अनुपल्लवि

कालाम्भोधरकन्तशरीरं
कौशिकशुकशौनक परिवारम्

चरणम्

कौसल्यादशरथसुकुमारं
कलिकल्मषभयगहनकुठारम् ॥ १ ॥

परमहंसहृत् पद्मविहारं
प्रतिहतदशमुखबलविस्तारम् ॥ २ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

13 khelati brahmANDe

१३. खेलति ब्रह्माण्डे

रागम्: सिन्दुभैरवि ताळम्: आदि

पल्लवि

खेलति ब्रह्माण्डे भगवन्
खेलति ब्रह्माण्डे

चरणम्

हंसः सोऽहं हंसः सोऽहं
हंसः सोऽहं सोऽहमिति ॥ १ ॥

परमात्मोऽहं परिपूर्णोऽहम्
ब्रह्मैवाहमहं ब्रह्मेति ॥ २ ॥

त्वक्चक्षुः श्रुतिजिह्वाघ्राणे
पञ्चविधप्राणोपस्थाने ॥ ३ ॥

शब्दस्पर्शरसादिकमात्रे
सात्विकराजसतामससमित्रे ॥ ४ ॥

बुद्धिमनश्चित्ताहंकारे

भूजलतेजोगगनसमीरे ॥ ५ ॥

परमहंसरूपेण विहर्ता
ब्रह्मविष्णुरुद्रादिककर्ता ॥ ६ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

14 sthiratA nahi nahi re

१४. स्थिरता नहि नहि रे

रागम्: पुन्नागवराळि ताळम्: आदि

पल्लवि

स्थिरता नहि नहि रे मानस
स्थिरता नहि नहि रे

चरणम्

तापत्रय सागरमग्नानां
दर्पाहङ्कारविलग्नानाम् ॥ १ ॥

विषयपाशवेष्टितचितानां
विपरीतज्ञानविमतानाम् ॥ २ ॥

परमहंसयोगविरुद्धानां
बहुचञ्चलतरसुखसिद्धानाम् ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

15 nahi re nahi re

१५. नहि रे नहि रे शङ्का

रागम्: मोहनम् तालम्: आदि

सदाशिवब्रह्मेन्द्र कीर्तनम्

पल्लवि

नहि रे नहि रे शङ्का काचित्
नहि रे नहि रे शङ्का

चरणम्

अजमक्षरमद्वैतमनन्तं
ध्यायामि ब्रह्म परं शान्तम् ॥ १ ॥

ये त्यजन्ति बहुतरपरितापं
ये भजन्ति सच्चित्सुखरूपम् ॥ २ ॥

परमहंसगुरुभणितं गीतं
ये पठन्ति निगमार्थसमेतम् ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

16 cintA nAsti kila

१६. चिन्ता नास्ति किल

रागम्: नवरोज्   ताळम्: आदि

पल्लवि

चिन्ता नास्ति किल तेषां
चिन्ता नास्ति किल

चरणम्

समदमकरुणासंपूर्णानां
साधुसमागमसंकीर्णानाम् ॥ १ ॥

कालत्रयजितकन्दर्पाणां
खण्डितसर्वेन्द्रियदर्पाणाम् ॥ २ ॥

परमहंसगुरुपदचित्तानां
ब्रह्मानन्दामृतमत्तानाम् ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

17 brahmaivAhaM kila

१७. ब्रह्मैवाहं किल

रागम्: नादनमक्रिया ताळम्: आदि

पल्लवि

ब्रह्मैवाहं किल सद्गुरुकृपया
ब्रह्मैवाहं किल

चरणम्

ब्रह्मैवाहं किल गुरुकृपया
चिन्मयबोधानन्दघनम् तत् ॥१ ॥

श्रुत्यन्तैकनिरूपितमतुलं
सत्यसुखाम्बुधिसमरसमनघम् ॥२ ॥

कर्माकर्मविकर्मविदूरं
निर्मलसंविदखण्डमपारम् ॥३ ॥

निरवधिसत्तास्पदपदमजरं
निरुपममहिमनि निहितमनीहम् ॥४ ॥

आशापाशविनाशनचतुरं

कोशपञ्चकातीतमनन्तम् ॥ ५ ॥

कारणकारणमेकमनेकं
कालकालकलिदोषविहीनम् ॥ ६ ॥

अप्रमेयपदमखिलाधारं
निष्प्रपञ्चनिजनिष्क्रियरूपम् ॥ ७ ॥

स्वप्रकाशशिवमद्वयमभयं
निष्प्रतर्क्यमनपायमकायम् ॥ ८ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

18 **sarvaM brahmamayam**

१८. सर्वं ब्रह्ममयम्

रागम्: चेञ्चुर्ट्टि ताळम्: आदि

पल्लवि

सर्वं ब्रह्ममयं रे रे
सर्वं ब्रह्ममयम्

चरणम्

किं वचनीयं किमवचनीयं
किं रचनीयं किमरचनीयम् ॥ १ ॥

किम् पठनीयं किमपठनीयं
किं भजनीयं किमभजनीयम् ॥ २ ॥

किं बोद्धव्यं किमबोद्धव्यं
किं भोक्तव्यं किमभोक्तव्यम् ॥ ३ ॥

सर्वत्र सदा हंसध्यानं
कर्तव्यं भो मुक्तिनिदानम् ॥ ४ ॥

19 tadvajjIvatvaM brahmaNi

१९. तद्वज्जीवत्वं ब्रह्मणि

रागम्: कीरवाणि ताळम्: आदि

पल्लवि

तद्वज्जीवत्वं ब्रह्मणि
तद्वज्जीवत्वम्

अनुपल्लवि

यद्वत् तोये चन्द्रद्वित्वं
यद्वन्मुखरे प्रतिबिम्बत्वम्

चरणम्

स्थाणौ यद्वन्नररूपत्वं
भनुकरे यद्वत् तोयत्वम् ॥ १ ॥

शुक्तौ यद्वत् रजतमयत्वं
रज्जौ यद्वत् फणिदेहत्वम् ॥ २ ॥

परमहंसगुरुणाऽद्वयविद्या
भणति धिक्कृतमायाविद्या ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

20 pUrNa bodhoham

२०. पूर्णबोधोऽहं सदानन्द

रागम्: पूर्विकल्याळि ताळम्: आदि

पल्लवि

पूर्णबोधोऽहं सदानन्द
पूर्णबोधोऽहम्

अनुपल्लवि

वर्णाश्रमाचारकर्मादिदूरोऽहं
स्वर्णवदखिलविकारगतोऽहम्

चरणम्

प्रत्यगात्माऽहं प्रवितत

सत्यघनोऽहम्

श्रुत्यन्तशतकोटिप्रकटितब्रह्माहं
नित्योऽहमभयोऽहमद्वितीयोऽहम् ॥ १ ॥

साक्षिमात्रोऽहं प्रगलित

पक्षपतोऽहम्

सूक्ष्मोऽहमनघोऽहमद्भुतात्माऽहम् ॥ २ ॥

स्वप्रकाशोऽहं विभुरहं

निष्प्रपञ्चोऽहम्

अप्रमेयोऽहमचलोऽहमकलोऽहं
निष्प्रतर्क्याखण्डैकरसोऽहम् ॥ ३ ॥

अजनिर्मितोऽहं बुधजन

भजनीयोऽहम्

अजरोऽहममरोऽहममृतस्वरूपोऽहं
निजपूर्णमहिमनि निहितमहितोऽहम् ॥ ४ ॥

निरवयवोऽहं निरुपम

निष्कलङ्कोऽहम्

परमशिवेन्द्र श्रीगुरुसोमसमुदित-
निरवधिनिर्वाणसुखसागरोऽहम् ॥ ५ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

21 AnandapUrNa bodhoham (1)

२१. आनन्दपूर्णबोधोऽहम्

रागम्: मध्यमावति ताळम्: खण्ड चापु (झंप)

पल्लवि

आनन्दपूर्णबोधोऽहं सतत-
मानन्दपूर्णबोधोऽहजरोहम्

चरणम्

प्रत्यगद्वैतसारोऽहं सकल

श्रुत्यन्ततन्त्रविदितोऽहं अमृतोऽहम्

अत्यनन्तर भावितोऽहं विदित-
नित्यनिष्कलरूपनिर्गुणपदोऽहम् ॥१ ॥

साक्षिचिन्मात्रगात्रोऽहं परम-

मोक्षसाम्राज्याधिपोऽहममृतोऽहम्

पक्षपातातिदूरोऽहं अधिक-
सूक्ष्मोऽहमनवधिक सुखसागरोऽहम् ॥२ ॥

स्वप्रकाशैकसारोऽहं सदह-

निष्प्रतर्क्योऽहं अमरोऽहं चिदह-
मप्रमेयाख्यमूर्तिरेवाहम् ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

22 AnandapUrNabodhoham (2)

२२. आनन्दपूर्णबोधोऽहम्

रागम्: शङ्कराभरणम् तालम्: मिश्र चापु

पल्लवि

आनन्दपूर्णबोधोऽहं सच्चि-
दानन्दपूर्णबोधोऽहं शिवोऽहम्

चरणम्

सर्वात्मचरोऽहं परि-
निर्वाणनिर्गुणनिखिलात्मकोऽहम्
गीर्वाणवर्यानतोऽहं काम-
गर्वनिर्वापणधीरतरोऽहम् ॥ १ ॥

सत्यस्वरूपापरोऽहं वर-
श्रुत्यन्तबोधितसुखसागरोऽहम्
प्रत्यगभिन्नपरोऽहं शुद्ध-
मन्तरहितमायातीतोऽहम् ॥ २ ॥

अवबोधरससागरोऽहं व्योम-
[illegible]

कविवरसंसेव्योऽहं घोर-
भवसिन्धुतरक परमसूक्ष्मोऽहम् ॥ ३ ॥

बाधितगुणकलनोऽहं
शोधितसमरसपरमात्माऽहम्
साधनजातातीतोऽहं निरु-
पाधिकनिःसीमभूमानन्दोऽहम् ॥ ४ ॥

निरवयवोऽहमजोऽहं
निरुपममहिमनि निहितमहितोऽहम्
निरवधिसत्वघनोऽहं धीर-
परमशिवेन्द्र श्रीगुरुबोधितोऽहम् ॥ ५ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

23 krShNa pAhi

२३. कृष्ण पाहि

रागम्: मध्यमावति ताळम्: आदि

पल्लवि

कृष्ण पाहि जितकृशानो पाहि
कृष्ण वृष्णिकुलदीप विष्णो पाहि

चरणम्

अत्यन्तसुकुमार साधुशील वर
श्रुत्यन्तखेलन गोपाल लील ॥ १ ॥

बृन्दारक मुनिबृन्दवन्द्यपाद
बृन्दावनचर वेणुरसविनोद ॥ २ ॥

सत्यभामा कुचकुंकुमाङ्कितांग
सत्यकाम सनकनुत पाद गङ्ग ॥ ३ ॥

परमहंसमानस विलास हंस
परम पावन नाम भावित हंस ॥ ४ ॥

24 tu”nga tara”nge ga”nge

२४. तुङ्गतरङ्गे गङ्गे जय

रागम्: कुन्तळवराळि ताळम्: आदि

पल्लवि

तुङ्गतरङ्गे गङ्गे जय
तुङ्गतरङ्गे गङ्गे

अनुपल्लवि

कमलभवाण्डकरण्डपवित्रे
बहुविधबन्धच्छेदलवित्रे

चरणम्

दूरीकृतजनपापसमूहे

पूरितकच्छपगुच्छग्राहे

परमहंसगुरु भणितचरित्रे
ब्रह्मविष्णुशंकरनुतिपात्रे

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇